26/07/2019 को शिमला के संजौली कॉलेज में Scientific & Polemic Society द्वारा महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराध-कारण तथासमाधान का रास्ता नामक विषय पर एक विचार-चर्चा का आयोजन किया गया। आम तौर पर तमाम धंधेबाज चुनावी पार्टीयों के नेताओंद्वारा महिलाओं के विरुद्ध लगातार बढ़ रहे इन यौन अपराधों के लिए औरतों को ही जिम्मेवार ठहराते हुए उनके पहनावे, मोबाईल पर बातकरने, देर रात तक बाहर रहने पर सवाल उठाये जाते हैं। इसके अलावा अक्सर इस तरह की बाते कुछ महिलाओं से भी सुनने को मिल जातीहै, जो इन वारदातों के लिए लड़कियों के ज़्यादा पढ़ने-लिखने और लड़कों की बराबरी करने की कोशिश को इसका जिम्मेवार मानती है। परंतुअसलियत में, इन तमाम स्त्री-विरोधी अपराधों के पीछे मूल कारण है हमारी पितृसत्ता पर आधारित समाजिक व्यवस्था, जहाँ एक औरत कोआज भी मर्द के पैरों की जूती समझा जाता है। उसे एक इंसान के रुप में देखने की बजाए एक बच्चा पैदा करने की मशीन या अगर साफ-साफ शब्दों में कहे तो सम्पत्ति का वारिस पैदा करनेसे ज़्यादा कुछ नहीं समझा जाता है। व्यवस्था में ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफ़ा कमाने के लिए पूंजीपतियों को सस्ते श्रम की आवश्यकता होती हैं.इसलिए पूंजीपति महिलाओं और बच्चों को काम पर रखने को प्राथमिकता देते है, क्योंकि उनको काफी कम वेतन देकर अधिक कामकरवाया जा सकता है। पूंजीवाद ने जहाँ एक हद तक स्त्रियों को घर की चारदीवारी से बाहर निकाला हैं, परन्तु वही उसने पुरानी और सड़ी-गली सामंती रिवाजों को भी कायम रखा हैं। यह बात भारत जैसे पिछडे पूँजीवादी देशों पर और भी अच्छी तरह से लागू होती है जहाँ पितृसत्ताके मेल ने स्त्रियों को भोग विलास की वस्तु और बच्चा पैदा करने की मशीन तक सीमित कर दिया है। असलियत में पितृसत्तात्मकमानसिकता ही उपजाऊ ज़मीन प्रदान करता है जिसमे स्त्रियों के ख़िलाफ़ बर्बर से बर्बर अपराध आम घटनाएँ बन जाते हैं। इसके अलावा,टीवी, अखबारों और इन्टरनेट में जो औरत-विरोधी संस्कृति और अश्लीलता परोसी जाती है, वह भी समाज में स्त्री-विरोधी अपराधों कीज़मीन तैयार करती है। जहाँ तक पुलिस का सवाल है तो जैसा कि अक्सर देखा गया है, पुलिस का रवैया इस प्रकार के ज़्यादातर मामलों मेंबहुत ही गैर-जिम्मेदाराना होता है। इससे साफ़ हो जाता है कि पुलिस और सरकार के भरोसे औरतों के खिलाफ़ लगातार हो रही इस हिंसा कोनहीं रोका जा सकता है। इन तमाम अपराधों पर रोक लगाने के लिए हमें संघर्ष के नए तरीके ईजाद करने होंगे। इसलिए, बलात्कारियों औरलफ़ंगों को मुँहतोड़ जवाब देने के लिए अपने गली-मोहल्लों में लड़के और लड़कियों के सुरक्षा चौकसी दस्ते बनाने होगें जो ऐसी घटनाओं कोअंजाम देने वालों के खिलाफ़ तुरंत कारवाई करे। इसी के साथ-साथ अश्लील सामग्री और पॉर्न वीडियो उपलब्ध कराने वाली दुकानों केमालिकों के खिलाफ़ कारवाई करने के लिए जनता को लामबंद करने का भी काम करे। इसके अलावा,मीडिया द्वारा फैलाई जा रही औरत-विरोधी मानसिकता का मुकाबला करने के लिए जनता के सहयोग से एक वैकल्पिक मीडिया का माँडल खड़ा करने की भी सख्त आवश्यकताहै।